Fourth Plan have been estimated at about 20 m. tonnes. As against this requirement, the capacity of existing and the Third Plan washery project is 14·47 m. tonnes. A further capacity of 3·38 m. tonnes has been planned for in the Fourth Plan by setting up new washeries. Proposals for setting up further capacity to meet deficit of about 2.0 m. tonnes of washed coal are under consideration.

(b) proposals in this regard are under consideration.

(c) and (d). The intention is to manufacture all future washery plants indigenously. For this purpose, four firms in the private sector have been licensed, in addition to the public sector undertaking the Mining and Allied Machinery Corporation.

प्रतिरक्षा उत्पादन

*190. श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री स० च० सामन्त :
श्री पाराशर :
श्री श० ना० चयवेंदी :
श्री वी० च० शर्मा :
श्री मधु लिमये :
श्री रामसेवक यादव :
श्री बागड़ी :
श्री प्र० र० चक्रवर्ती :
श्री प्र० च० बरुआ :
श्री यशपाल सिंह :
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री हिम्मतसिंहका :
श्री हेडा :
डा० सरोजिनी महिषी :
श्री ओंकार लाल बेरवा :
श्री बृजराज सिंह :
श्री गोकरन प्रसाद
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री मलाइझामी :
श्री कजरोलकर :
श्री रामपुरे :
श्री मोहम्मद कोया :
श्री गुलशन :
श्री वासुदेवन नायर :
श्री वारियर :
श्री राम हरख यादव :

क्या उद्योग तथा संभरण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्र के किन-किन उद्योगों का प्रतिरक्षा सम्बन्धी सामान के उत्पादन कार्य के लिये प्रयोग किया जा सकता है;

(ख) उक्त उद्योगों को प्रतिरक्षा उत्पादन के काम में लाने के लिए क्या व्यवस्था की जा रही है;

(ग) क्या प्रतिरक्षा मंत्रालय की सलाह से प्रतिरक्षा उत्पादन बढ़ाने की कोई योजना तैयार कर ली गई है; और

(घ) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

उद्योग तथा संभरण मंत्रालय में संभरण तथा तकनीकी विकास मंत्री (श्री के० रघुरामय्या) : (क) सरकारी और गैर-सरकारी उद्योग जो प्रतिरक्षा सम्बन्धी सामान बनाने की क्षमता रखते हैं, अनेक संख्या में हैं। अतः उन के नामों को सूचीबद्ध नहीं किया जा सकता। यह भी वांछनीय होगा कि सुरक्षा के हित में, प्रतिरक्षा उत्पादन में लगे औद्योगिक यूनिटों के नाम सूचीबद्ध न किये जायें।

(ख) से (घ). सम्भरण तथा तकनीकी विकास विभाग प्रतिरक्षा सेवाओं तथा अन्य आवश्यक मांग कर्ताओं से गहरा और लगातार सम्पर्क बनाये हुए हैं ताकि प्रतिरक्षा माल की कम से कम समय की मांगों का अभिनिश्चय और अभिज्ञान कर सके। इस प्रकार के अभिज्ञान के पश्चात् सम्भरण तथा तकनीकी विकास विभाग अपेक्षित उत्पादन क्षमता रखने वाली यूनिटों का पता लगाता है। विभाग, जहां आवश्यक हो,

उनको कच्चे माल और घटकों की जरूरी तथा समय पर सप्लाई करता है । ऐसी औद्योगिक यूनिटों को नमूने और नकशे भी सप्लाई किये जाते हैं साथ ही साथ उत्पादन के प्रक्रम काल में तथा निरीक्षण के समय तकनीकी सलाह भी दी जाती है । इसके साथ साथ, जो यूनिटें नई प्रतिरक्षा मदों के विकास में सफल रही हैं, उन्हें उपयुक्त प्रोत्साहन दिया जाता है ।

कार्यपालन में, पूर्ति और निपटान महानिदेशालय तथा तकनीकी विकास महानिदेशालय, उद्योग को, अत्यन्त तकनीकी उत्पाद, विशेषकर उन मदों, की सप्लाई के लिए जिनके बारे में पूर्व अनुभव नहीं था, नई सुविधाओं को बनाने और वर्तमान सुविधाओं से अनुकूलन के लिए, सहायता देते रहे हैं ।

Manufacture of Watches

*191. **Shri Vishwa Nath Pandey:**
Shri Bhanu Prakash Singh:
Shri Kishen Pattnayak:
Shri Bagri:
Shri Madhu Limaye:
Shri Yashpal Singh:
Dr. Mahadeva Prasad:

Will the Minister of **Industry and Supply** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 247 on the 27th August, 1965 and state:

(a) whether Government have finalised the proposals regarding Swiss and Soviet collaboration in the manufacture of watches in India; and

(b) if so, the result thereof?

The Deputy Minister in the Ministry of Industry and Supply (Shri Bibudhendra Misra): (a) and (b). The proposals are still under consideration.

Production and Export of Manganese Ore

*192. **Shri Subodh Hansda:** Will the Minister of **Commerce** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the production of manganese ore is not sufficient to meet the demand for export against orders received;

(b) if so, the steps being taken to increase the production; and

(c) the total quantity to be exported during 1965-66?

The Minister of Commerce (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). While there is no particular difficulty in regard to lower grades, difficulty is being felt in meeting the demands for higher grade ore which have increased both from the local ferro-manganese industry and from the export angle. Various steps needed to increase production have recently been suggested by the Manganese Ore Committee and their recommendations are being processed now by the Mineral Ore Export Advisory Committee. The steps suggested include grant of more leases, assistance towards mechanization, beneficiation and blending.

(c) The total quantity contracted to be exported during 1965-66 is approximately 1·7 million metric tons.

Export of Steel

*193. **Shri Vidya Charan Shukla:**
Shri Hukam Chand Kachhavaiya:
Shri Parashar:
Dr. Chandrabhan Singh:
Shri Chandak:
Shri J. P. Jyotishi:
Shrimati Minimata:
Shri Daji:
Shri Wadiwa:
Shri Bade:

Will the Minister of **Steel and Mines** be pleased to state:

(a) whether there is any proposal to export steel from India;